ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-1* Issue-8* November- 2016
Anthology : The Research

युवाओं में मादक व्यसन का कारण एवं निवारण

वन्दना
एसोसिएट प्रोफेसर एण्ड हेड,
भूगोल विभाग,
वी0 वी0 पी0 जी0 कॉलेज,
शामली

सारांश

भगवान (भ से भूमि, ग से गगन, व से वायु, अ से अग्नि और न से नीर) ने पंचतत्वों से ही समग्र सृष्टि (जीव, जन्तुओं आदि) की रचना की। इस भू–पृष्ठ पर मानव जीवन भगवान की सबसे अद्भुत, सबसे दिव्य, सबसे सुन्दर, सबसे शक्तिशाली एवं सबसे बुद्धिमान कृति है जो पंचतत्वों से ही निर्मित है। अतः मानव वास्तव में भगवान की सृष्टि का एक अलौकिक श्रृंगार है और मानव देह में 'युवा अवस्था' भगवान का दिया हुआ अद्भुत उपहार है।

मुख्य शब्द : मादक व्यसन, पंचतत्व, युवा अवस्था

प्रस्तावना

भारत एक आध्यात्मिक एवं पुरुष प्रधान देश है। यहाँ मानव ने अपने ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्यागिकी के आधार पर चहुँमुखी क्षेत्र में प्रगति कर ली है, किन्तु उसने एक ऐसी संस्कृति को भी जन्म दिया है, जिसमें मानव के लिए सम्पूर्ण भौतिक सुख जुटा दिए तथा दूसरी ओर मानव से उसकी सुख अनुभव करने की क्षमता को छीन लिया। चारों ओर एक व्याप्त अन्तहीन व्यस्तता, विभ्रान्ति, छीन झपट, धोखधड़ी, और आपाधापी ने जीवन में विष घोल दिया है जिसके कारण भौतिक समृद्धि की चकाचौंध में मानव जीवन पथ पर ऐसा भटका की सुख खोजते खोजते वह सुख के स्त्रोतों से विमुख हो गया तथा अपनी शक्ति और सहजता खो बैठा। आज समूचे समाज में अस्थिरता, अशान्ति और आकुलता का वातावरण व्याप्त है और प्रत्येक व्यक्ति तनावग्रस्त है।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक भारत में मादक पदार्थो का सेवन पुरूष वर्ग के द्वारा प्रत्येक सामाजिक उत्सवों में किसी न किसी रूप में किया जाता था क्योंकि मादक पदार्थो के सेवन को भारतीय समाज ने स्वीकृति भी दे रखी थी। उदाहरणार्थ–

अथर्ववेद में 'भांग के प्रयोग का उल्लेख मिलता है।

आर्य लोग 'सोम रस' का प्रयोग (शराब के लिए) करते थे।

शिव पुराण में भांग के लिए, 'विजया' शब्द का प्रयोग किया गया है।

आधुनिक काल में 'मद्यपान' शब्द का प्रयोग शराब के लिए किया जाता है।

भारत में प्राचीन काल से ही अफीम, गांजा, चरस और कोकीन का प्रयोग होता रहा है।

अफीम का प्रयोग नौवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ। अफीम को पानी में घोल कर या उसकी छोटी–2 गोलियाँ बनाकर पाचन सम्बन्धी दोष, कफ, दर्द, पीड़ा, अनिद्रा आदि बीमारियों को दूर करेने के लिए किया जाता था। अकसर महिलाएँ अपने बच्चों को सुलाने के लिए भी अफीम का प्रयोग करती रही है।

भाँग का प्रयोग बर्फी, लड्डू, कचौड़ी एवं पकौड़ों में डालकर किया जाता था।

कोकीन का प्रयोग उच्च वर्ग के लोगों, जमींदारों, नवाबों और बादशाहों द्वारा किया जाता रहा है।

वर्तमान समय में बदलती हुई सामाजिक मान्यता में, कुछ नया करने की चाहत, तरह–तरह के तनाव आदि ऐसे कारण है, जिनके कारण समाज में मादक व्यसनों का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ रहा है। चिन्ता का विषय इसलिए है कि आज का युवा इस और आकर्षित होकर इसका सेवन बढ़ाता चला जा रहा है। वास्तव में युवाओं में प्रारम्भ में उसकी शुरूआत मीठी सुपारी और सादे पान मसाले से होती है जो शनै–शनै तम्बाकूयुक्त गुटका और सिगरेट से बढ़ते–2 मादक वस्तुओं (नशीली दवाओं) तक पहुँचती है। अपने दबंग साथियों के दबाव अथवा सामाजिक चक्रव्यूह में जब युवा फँस जाते है तो उन्हें इस दलदल से निकलना असम्भव हो जाता है और उनका सुनहरा भविष्य दांव पर लग जाता है क्योंकि मादक दवाओं में अल्पकालिक सुखद मनोदशा उत्पन्न करने के लिए मूलतः रासायनिक वस्तुओं का आदतन उपयोग किया जाता है। दवाओं (Drugs

Abuse) का प्रयोग औषधियों के रूप में और Drugs Addiction का अर्थ अनुचित प्रयोग से है जिससे शारीरिक व मानसिक हानि होती है।

मादकता (नशे) के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली दवाऐं तीन प्रकार की होती है–

प्रथम अपर्स (Uppers) जो युवाओं को अधिक ऊर्जा और आत्मविश्वास का अनुभव कराती है। कुछ सामान्य अपर्स है– कोकेन (Cocains), एक्सटेसी (Ecstasy), स्पीड़ (Speed) और क्रेक कोकेन (Crack Cocaine)

द्वितीय डाउनर्स (Downers) कहलाती है। इनको लेने वाला व्यक्ति स्वयं को शांत व तनावरहित अनुभव करता है और उसे अत्यधिक नींद आती है। कुछ डाउनर्स है– एल्कोहल (Alcohol), हशीश (Hashish), हीरोइन (Heroin) और क्यूलेड्स (Quaaludes)

तृतीय हेल्यूसिनोजन्स (Hallucinogens) है। इनका सेवन करने वाले को भ्रम का अहसास होता है या वो नींद में चले जाते है। कुछ हेन्यूसिनोजन्स है– एल.एस. डी. (LSD) और मसकेलिन (Mescaline)

उपरोक्त के अतिरिक्त भी आधुनिक समय में चर्चित (नशीली) मादक दवाऐं भी है जिनका सेवन आज का युवा अत्यधिक करता है।

क्रिस्टल मेथ (Crystal Meth Drug) को मेथेम्फेटामाइन (Methamphetamine) भी कहते है। यह स्पीड़ (Amphatamine/Speed) नामक ड्रग से बनाया जाता है। इसके सेवन से रोगी को भूख नही लगती और ऊर्जा व गतिविधियाँ बढ़ जाती है। इसके साथ ही सेवन करने वाले व्यक्ति में आत्मविशवास बढ़ने और स्वस्थ होने का भी एहसास होता है।

क्रिस्टल मेथ शेड्यूल–2 उत्तेजक ड्रग है। इसका प्रयोग डॉक्टर कई रोगों के इलाज के लिए करते है और ये सिर्फ प्रिस्क्रिप्शन पर ही दी जाती है। लेकिन युवाओं के बीच इसकी बढ़ती लोकप्रियता के कारण ये गैरकानूनी तरीके से बनाई और बेची जाती है। इसके प्रभाव से युवाओं में हिंसक और आक्रामक प्रभाव प्रतिबिम्बित होता है।

क्रिस्टल मेथ का सेवन युवाओं के बीच कई रूपों में प्रचलित है। कुछ युवा इसे सूंघकर, कुछ सिगरेट में मिलाकर धूम्रपान में, कुछ खाने के रूप में और कुछ इंजेक्शन के रूप में प्रयोग करते है। अलग–अलग तरीकों से क्रिस्टल मेथको लेने पर इस ड्रग का प्रभाव भी अलग–अलग होता है। इसकी एक विशेषता यह है कि व्यक्ति का शरीर बहुत जल्दी इसका आदी हो जाता है। क्रिस्टल मेथ को आसानी से घर पर बनाया जा सकता है। इसलिए इसके प्रसार को रोकना आसान नहीं है। इसकी आदत व्यक्ति को बुरी तरह जकड़ लेती है जिससे यह बेहद खतरनाक रूप ले लेती है। इसका नशा भी जल्दी उतरता है। इसलिए शरीर में मादकता बनायें रखने के लिए व्यक्ति इसकी डोज बार–2 लेते है। जिससे अधिक सेवन की आशंका बनी रहती हे।

ब्राउन शुगर (Brown Sugar) पाउडर के रूप में पाई जाती है। वास्तव में यह कोकेन और हीरोइन का कचरा सहित स्ट्रीचनाइन (Strychnine) का मिश्रण है। इसका नशा करने वाला इसे फॉईल पेपर पर जलाते है और उससे निकलने वाले धुएँ को नली के द्वारा शरीर के अन्दर लेते है और उन्हें तुरन्त नींद आ जाती है। इसका सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि इसमें व्यक्ति अपनी सुरक्षा नहीं कर पाते जिससे उनके खतरे की आशंका बढ़ जाती है।

ड्रग्स के प्रयोग से तरह–2 की समस्याऐं उत्पन्न होती है। इसकी आदत एक ऐसी विकृति है जो सिर्फ लेने वाले को प्रभावित नहीं करती वरन् अनेक अपराधों को भी जन्म देती है जैसे हत्या, बलात्कार, आत्महत्या आदि।

युवाओं के अन्दर मादकता के (Drug Addiction) प्रभाव विभिन्न रूपों में दिखाई देता है–

1. नशे से मस्तिष्क इतना अधिक प्रभावित हो जाता है कि चिन्तन, मनन, मन्थन और सही निर्णय लेने की क्षमता लगभग समाप्त हो जाती है।
2. आत्मसंयम समाप्त हो जाता है।
3. क्रियात्मक समन्वय शिथिल हो जाता है।
4. अनुभूतियों के प्रत्यक्ष में विभेद की क्षमता समाप्त हो जाती है अर्थात स्मरणशक्ति क्षीण हो जाती है।
5. व्यक्ति मादक द्रव्य लेने के बाद कुछ समय तक अतिरिक्त शक्ति, ऊर्जा, प्रसन्नता, संतोष आदि अनुभव करता है व अवास्तविक संसार अर्थात काल्पनिक संसार में पहुँच जाता है जहाँ न उसे किसी प्रकार की चिन्ता, न ही किसी प्रकार का भय होता है।
6. अन्य शारीरिक लक्षणों में भी परिवर्तन होता है– दर्द, संवेदना में कमी आती है।
7. प्रारम्भ में मुख्य प्रभाव उल्टी या मितली आना (Vomiting)।
8. आँख की पुतली का संकुचन।
9. पाचन–तन्त्र में भोजन पचाने में बाधा आना।
10. रक्तचाप में कमी आना।
11. शरीर से पसीना अधिक आना।
12. श्वसन में मंदता होना, कई बार श्वसन गति के रुक जाने से व्यक्ति की मृत्यु भी हो जाती है।

अत्यधिक मादक व्यसन (Drug Addiction) के लक्षण भी इस प्रकार है–

1. मादक व्यसन लेते रहने की अत्याधिक इच्छा तथा उसे किसी भी प्रकार प्राप्त करना– चोरी करके, बर्तन, गहने, सामान आदि बेचकर।
2. डोज बढ़ाने की प्रवृत्ति।
3. ड्रग पर शारीरिक निर्भरता अर्थात शरीर को कार्य संचालन के लिए मादक पदार्थ (द्रव्य) का सेवन निरन्तर चाहिए।
4. ड्रग पर मनोवैज्ञानिक निर्भरता अर्थात मादकता से उत्पन्न होने वाले सुख की अनुभूति पर निर्भरता।
5. ड्रग के कारण व्यक्ति और समाज पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है क्योंकि नशा करने वाला मानसिक रूप से विकृत हो जाता है तथा उसके शरीर में कम्पन्न विकसित हो जाता है। अस्पष्ट भय अधिक विकसित हो जाता है। सामान्य सामाजिक नियमों, समय तथा परिस्थिति का ख्याल नहीं रहता, कभी

कभी इस व्यसन के कारण अपने व्यवसाय से भी वंचित रहना पड़ता है। सामाजिक प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है। मानसिक कुंठा और आत्मग्लानि के लक्षण भी व्यक्ति में प्रतिबिम्बित होने लगते है।

6. परिवारिक जीवन बर्बाद हो जाता है जिसके कारण मनोबल भी पूर्ण रूप से निम्न स्तर पर आ जाता है।

(Drug Addiction) मादक व्यसन के कारणों को चार बिन्दुओं में रखा जा सकता है

1. **मनोवैज्ञानिक कारण** 85% मनोवैज्ञानिक कारणों से मादक वस्तुओं का सेवन करते है, प्रारम्भ में ड्रग के सेवन से तनाव, चिन्ता में कमी आती है, तनावपूर्ण परिस्थितियों में बिना किसी तरह की चिन्ता दिखलायें उत्तम निष्पादन बनाये रखने में सक्षम हो जाते है। उदाहरणार्थ– विभिन्न प्रकार के खेलों में प्रतिभागिता के लिए, रात–रात भर जाग कर पढ़ने के लिए तनाव व भय को भूल जाता है और व्यक्ति को काल्पनिक आनन्द मिलता है जिससे वह और अधिक मादक द्रव्य लेता है।
2. **व्यक्तित्व कारक** कई अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि नशा करने वाला व्यक्ति सांवेगिक रूप से अपरिपक्व होते है, उन्हें संसार से अधिक आशाऐं होती है। वे अन्य लोगों से अत्याधिक प्रशंसा और स्नेह की आशा रखते है। असफलता के प्रति तीव्र हीन और निराशावादी भावनाऐं होती है। क्षमता कम होती है। आक्रामकता तथा आवेगशील गुण पाये जाते है। अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ हैकि जिनका असमाजिक व्यक्तित्व होता है उनमें अधिकतर 80% cases में समाज विरोधी व्यक्ति और Drug addicts में गहरा सम्बन्ध पाया जाता है।
3. **निर्भर व्यक्तित्व** वाले व्यक्तियों को दूसरों से भावात्मक समर्थन व ध्यान चाहिए, इसके अभाव में वे उसे मादक द्रव्यों से स्थानापन्न करते है। जिन लक्षणों के प्रति भावात्मक समर्थन चाहिए वे है– निष्क्रियता, निम्न आत्मसम्मान, आत्म निदेशनकी सीमित क्षमता, अन्य व्यक्तियों में अविश्वास, तनाओं का सामना करने में कठिनाई पोरुर्षा पहचान (Masculine Identification की अपर्याप्तता तथा बचपन के संघर्षो के समाधान की असफलता। इन कारणों के स्थानापन्न में मादक द्रव्यों का प्रयोग करते है।
4. **शक्ति आवश्यकता** की अभिव्यक्ति के संदर्भ में कभी–2 (शराब पीने वाले) मादक पदार्थो का सेवन करने वाले को सामाजिक शक्ति अनुभव होती है और कभी–2 व्यक्तिगत शक्ति की अनुभूति होती है।
5. **क्षीण स्व/भय सिद्धान्त** में drug addiction आधुनिक जीवन की परिस्थितियों में भय और असुरक्षा की अनुभूति के कारण है।
6. **परिवारिक (माता–पिता) सम्बन्ध** स्नेहपूर्ण पारिवारिक सम्बन्ध के स्वरूप से मादक द्रव्यों का सेवन करने वाला कई बिन्दुओं से प्रभावित होता है–
   i. माता–पिता अपने बच्चों के जीवन में रूचि लेते है या नही,
   ii. माता–पिता अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग है या नही,
   iii. बच्चों के ड्रग्स के प्रति झुकाव में परिवार नियन्त्रण की प्रवृत्ति,
   iv. माता–पिता का बच्चों के प्रति अनुशासन,
   v. भाई–बहनों में ताल–मेल, समन्वय, घनिष्ठता,
   vi. माता–पिता के सामाजिक व नैतिक आदर्श,
   vii. बच्चों की माता–पिता में आस्था व सुरक्षा भावना।

ये उत्कृष्ट कारण है जिनका सीधा सम्बन्ध drug addiction से पाया जाता है। वास्तव में व्यक्तित्व विकास की सही दिशा एक स्वस्थ परिवार से ही मिलती है।

शारीरिक सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति शारीरिक दोषों व रोगों के कारण एवं द्रव्य के रासायनिक लक्षणों पर शारीरिक अनुकूलन के कारण से मादक द्रव्यों का सेवन करते है। ऐसा अनुभव किया गया है कि मादक वह अपने आप पर नियन्त्रण रखकर ड्रग्स से दूर रहे और उन्हें ऐसी दवाऐंद ी जाती है कि उनका मन ड्रग्स लेने को न करे।

अधिक मादक पदार्थ के स्थान पर कम मादक पदार्थो का सेवन (Substitutional Therapy) इस चिकित्सा में गम्भीर ड्रग्स (Strong drugs) के स्थान पर साधारण ड्रग्स का प्रयोग किया जाता है जिससे अधिक गम्भीर ड्रग्स के परिणामों से निपटा जा सके। उदाहरणार्थ हीरोइन के स्थान पर मसकेलिन (Mescaline) का प्रयोग किया जाता है। जिसके लक्षण कम गम्भीर होते है और व्यक्ति उसे उस ड्रग्स को लेने के लिए अस्पताल प्रतिदिन आना पड़ता है जहाँ चिकित्सकों के द्वारा ऐसी ड्रग्स उसे अपने आप से दूर रखने के लिए समझाया जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ उसे सुखमय जीवन के लिए सामाजिक समर्थन भी दिये जाते है ताकि उस व्यक्ति विशेष पर अनुकूल प्रभाव पड़े।

पारिवारिक चिकित्सा में चिकित्सक पूरे परिवार को सामान्य समस्याओं से अवगत कराता है जो अधिकतर सदस्यों में चिन्ता उत्पन्न करती है। उनसे विचार विमर्श करता है तथा उन्हें प्रेरित करता है कि अपने परिवार में नरा ढंग से आपस में अन्तः क्रिया करें तथा संघर्षो को दूर करने के उपायों पर बल डाले जिससे परिवार के समस्त सदस्यों में एक दूसरे के प्रति सहानुभूति तथा परानुभूति बढ़े और उनमें समायोजन शक्ति में भी वृद्धि हो सके।

व्यवहार चिकित्सा में विरूचि चिकित्सा में चिकित्सक मादक व्यसन के प्रति व्यक्ति को विरक्त करने का प्रशिक्षण देता है जिससे कुसमायोजित व्यवहार अपने आप धीरे–2 बन्द हो जाता है।

आर्थिक सहयोग चिकित्सा में बहुत से युवकों में रोजगार न होने के कारण उनके अन्दर मादक द्रव्यों के सेवन की प्रवृत्ति पाई जाती है। अतः व्यवसाय उपलब्ध करा कर उन्हें आर्थिक सहयोग देकर उन्हें इस व्यसन से बचाया जा सकता है।

द्रव्यों के रोगियों की शारीरिक कोशिकाएं मादक द्रव्यों के साथ अनुकूलित और समायोजित हो जाती है। परिणामस्वरूप इन व्यक्तियों की शारीरिक आवश्यकता हो जाती है। ऐसी स्थिति में अपने आपको वे मादक द्रव्यों से अलग रखते है तो वे बेचैन हो जाते है। कई तरीके से

शारीरिक लक्षण जैसे पसीना आना, चक्कर आना, मितली आना, ऐंठन, विभ्रम आदि देखने को मिलते है। इन शारीरिक कष्टों से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति पुनः मादक द्रव्यों का सेवन करता है।

गोल्डमन 1998 ने अपने अध्ययन में कहा कि मादक पदार्थो का सेवन अनुवांशिकता से भी प्रभावित होता है।

अक्सर यह अनुभव किया गया है कि जब किसी भी व्यसनी से आप प्रश्न करेंगे कि उसने नशा करना कब शुरू किया तो सबका जवाब एक ही होता है कि सबसे पहले मित्र के कहने पर ही ड्रग ली थी। इसलिए सामाजिक सांस्कृतिक कारण में व्यसनी के 80% मित्र मादक पदार्थो का सेवन करते है, जिनमें लगभग 65% मित्र मादक द्रव्यों में 100% जकड़े हुए होते है। दिशाहीन समाज युवाओं को भटकाव का रास्ता दिखाता है।

सामाजिक परिवर्तन व सामाजिक विघटन का प्रभाव भी drug addiction पर पड़ता है।

आधुनिक समय में नगरीकरण और जनसंख्यावृद्धि के कारण आश्चर्यजनक रूप से समस्त धर्मो, जातियों की पृष्ठभूमियों आदि में मादक पदार्थो का सेवन तीव्रगति से बढ़ता जा रहा है।

निवारण

मादक पदार्थो के प्रकोप से युवाओं को बचाने के लिए विभिन्न संस्थान खोले गये है जिनमें चिकित्सा की जाती है। जैसे–

1. सिनैनोन (मुक्त)
2. ओडिसी (भ्रमण)
3. फोनिक्स हाउस (अमरपक्षी)

इनसंस्थानों व्यक्तियों का कोई इलाज नही होता वरन् उनमें यह आत्मविश्वास पैदा किया जाता है कि

वातावरण परिवर्तन की सलाह दी जा सकती है जिससे वातावरण को ही समस्या मानकर उसमें परिवर्तन कर तनाव को कम करने का कौशल दिखलाया जाता है।

संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा के अन्तर्गत मादक व्यक्ति का व्यवहार का कारण गलत संज्ञान या चिन्तन, गलत विश्वास माना जाता है। इसलिए संज्ञानात्मक पुर्नसंरचना की जाती है। सही चिन्तन विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में व्यक्ति की दमित इच्छाओं, चिन्तन, संघर्ष एवं डर आदि का मनोविश्लेषणात्मक, दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। संघर्ष, इच्छाओं, डर आदि को अचेतन मन से निकाल कर उसमें सकारात्मक सोच विकसित करने का प्रयास किया जाता है ताकि व्यक्ति स्वयं उनसे उत्पन्न होने वाले संवेगात्मक एवं समायोजन सम्बन्धित कठिनाईयों को ठीक से सुलझा सके तथा मादक द्रव्य व्यसन से अपना बचाव कर सके। इस चिकित्सा के निम्न बिन्दु महत्वपूर्ण है–

1. व्यक्ति अंधेरे कमरे में रहना पसन्द करता है, धीरे–धीरे दूसरे व्यक्तियों से सम्पर्क करता है।
2. मन में चिन्ता की बात आती है दूसरे व्यक्तियों से बात करना पसन्द नही करता, चुप रहता है।
3. कल्पनाओं के स्वप्न में रहना चाहता है।
4. शनैःशनैः नकारात्मक सोच से सकारात्मक सोच में परिवर्तित होता है।
5. समापन की अन्तिम अवस्था होती है।

इस चिकित्सा पद्धति में व्यक्ति का आन्तरिक विकास होता है इससे व्यक्ति की मनोवृत्ति, विश्वास व मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आता है तथा वह अपनी व्यक्तिगत प्रेरणाओं को सही अर्थ में समझने लगता है।

परामर्श (Counselling) चिकित्सा के अन्तर्गत drug addict कैसेसमायोजन बनाये रखे? परिस्थतियों से कैसे सामंजस्य बैठाये? सामाजिक सम्बन्ध कैसे बनाये रखे? मनोवैज्ञानिक स्थिति कैसे सामान्य रखे? इसके लिए परामर्श चिकित्सा की आवश्यकता होती है। इसके दो बिन्दु है–

समस्या का विश्लेषण में मादक व्यक्ति से खुलकर बात करनी चाहिए। व्यक्ति को प्रोत्साहित भी करना चाहिए। समस्याओं पर खुलकर सोच–विचार करना चाहिए, उनका सही–सही निदान करना चाहिए, उसकी समस्याओं का आदर करना चाहिए। जिससे drug addict को ऐसा न लगे कि लोग उसके प्रति संवेदनहीन है।

वैकल्पिक समाधान में सभी मादक द्रव्य व्यसन से पीड़ित व्यक्ति समान नही होते और न ही सभी व्यक्तियों की परिस्थितियां समान होती है। अतः व्यक्ति की सामाजिक व पारिवारिक स्थिति के अनुसार परामर्श दिया जाना चाहिए जिससे उसका समायोजन बना रह सके।

निवारण

1. मादक वस्तुओं का युवाओं में सेवन रोकने के लिए जन–शिक्षण आवश्यक है जिससे युवाओं को इससे होने वाली हानि का ज्ञाना कराया जाए। शैक्षणिक उपायों के लिए लक्ष्य चयन करना चाहिए, कॉलिज, विश्वविद्यालय के छात्र, छात्रावास में रहने वाले छात्र, मजदूर वर्ग, औद्योगिक श्रमिक, रिक्सा, बस, ट्रक चालक आदि।
2. मादक वस्तुओं का प्रयोग रोकने के लिए सामाजिक संस्थाओं और समाज के शिक्षित वर्ग को सामने आना चाहिए ताकि अशिक्षित व्यक्तियों में चेतना ला सके।
3. चिकित्सकों के द्वारा मादक द्रव्य औषधि के रूप में निर्देशित किये जाते है ऐसे निर्देशों के प्रति अभिवृद्धि से परिवर्तन करने से मादक द्रव्यों के दुरूपयोग को नियन्त्रित किया जा सकता है।
4. षड़यन्त्रकारियों को प्रतिरोधक दण्ड अवश्य मिलना चाहिए क्योंकि अवैध रूप से मादक वस्तुऐं बेचना, तस्करी करना, पुलिसकर्मी और अन्य कानून लागू करने वाले व्यक्ति जो बेचने वालों के साथ षड़यन्त्र में पाये जाते है उन्हें सरकार द्वारा दण्ड मिलना अत्यन्त आवश्यक है।
5. **माता–पिता की महत्वपूर्ण भूमिका**– युवाओं के मादक प्रयोग पर नियन्त्रण में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। माता–पिता की उपेक्षा, अधिक विरोध, वैवाहिक जीवन में सामंजस्य की कमी, युवाओं को विपरीत मार्ग में जाने को प्रेरित करती है। युवाओं की अध्ययन व अभिरूचियों की क्रियाओं में रूचि की कमी, गैर जिम्मेदार व्यवहार का बढ़ना, आवेगों व्यवहार आदि

प्रतिबिम्बित हो तो माता–पिता को सतर्कता रखनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कार्यक्रम निम्न भी होने चाहिए–

1. कुछ कार्यक्रम औषधि से पूर्ण परहेज
2. कुछ कार्यक्रम अल्प मात्रा में औषधि से परहेज
3. कुछ कार्यक्रम कम उम्र में औषधि न लेने का परहेज

रोकथाम कार्यक्रमों का केन्द्र बिन्दु (1) व्यक्ति विशेष हो सकता है, जहाँ औषधि के दुखद प्रभावों को बताया जाता है। (2) केन्द्र बिन्दु परिवार, माता–पिता को पारिवारिक कार्य में स्तर को उन्नत बनाने पर बल, संगी–साथियों के प्रभावों को रोकना (3) केन्द्र बिन्दु पूरा समुदाय– ऐसी औषधियों पर बल दिया जाता है जिससे औषधि का दुरूपयोग हमेशा के लिए समाप्त हो जाये।

योग

भारतीय दर्शन की एक शाखा है जिसमें आत्मोन्नति द्वारा drug abuse मादक द्रव्यों के सेवन का निवारण व रोकथाम सम्भव है–

योग द्वारा अन्तर्मन पर विजय पाना

1. हठ योग– शरीर को साधने का उपाय
2. राज योग– मन को साधने का उपाय
3. कर्म योग– कर्मेन्द्रियों को साधने का उपाय
4. ज्ञान योग– ज्ञानेन्द्रियों को साधने का उपाय
5. भक्ति योग– भक्ति के द्वारा अपने आपको पहचानना
6. मंत्र योग– मंत्रोच्चारण द्वारा शरीर का साधना
7. तंत्र योग– शारीरिक मानसिक क्रियाओं द्वारा मस्तिष्क को केन्द्रि करना
8. लय योग– समस्य कलाओं में निपुण होने का योग

निष्कर्ष

अंत में यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक समय में drug addict रूपी रोग का निवारण योग चिकित्सा पद्धति से पूर्ण रूप से किया जा सकता है। क्योंकि प्राचीन काल से भारत की इस अध्यात्मिक भूमि के ऊपर ऋषि मुनियों ने योग के द्वारा निरोगी और दीर्घायु रहने का सारगर्भित रहस्य बता दिया था जिसे आज के युग में देश विदेशों में लोकप्रियता मिल रही है।

भारत में सरकार ने मादक पदार्थो की तस्करी रोकने के लिए कानून बनाया है–

Nov. 14, 1985- The Narcotic Drugs and Pschotropic Substance Act

इस कानून का उल्लंघन करने पर 10 वर्ष–20 वर्ष का कठोर कारावास और 1 लाख से 2 लाख तक का जुर्माना।

भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय ने जन चेतना उत्पन्न करने के लिए नीति विकसित की है–

1. स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय समर्थन
2. परामर्श सुविधाऐं जुटाने को फण्ड
3. सामाजिक रक्षा राष्ट्रीय संस्थान

कुछ राज्य सरकारों ने और कुछ गैर सरकारी एजेंसियों ने विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए विशेषकर, मद्यपान और मादक वस्तुओं का दुरूपयोग के विरूद्ध एक विशेष सतर्कता पैदा करने के प्रोग्राम बनाये है और मार्गदर्शन के लिए कई परामर्श केन्द्र स्थापित किये है– इन केन्द्रों के कार्य है–

1. उपचार के स्त्रोतो की सूचना देना।
2. पुनःस्थापना में लगी ऐजेंसियों के साथ समन्वय स्थापित करना।
3. ज्ञान फैलाने वाली ऐजेंसियों के साथ सम्पर्क रखना।
4. तथ्य एकत्रित करना।
5. व्यक्तिगत और सामूहिक चिकित्सा के लिए आवश्यक मनोवैज्ञानिक सहायता देना।

औषधि दुरूपयोग के रोकथाम के उपायों को भी उपचार के मार्ग में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।

National Institute of Drug Abuse NOIDA 1991के अनुसार भी औषध रोकने के लिए कई तरह के प्रोग्राम बनाए गए है जिनकी तकनीकी भिन्न–भिन्न है–

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Arneja, Indu and Sen, A.K. (1998) Personality Characteristics of drug abuses and non-abuses: A factor analytic study, Disability and Impairments, 2(1) 9-19.*
2. *Bhargava, M (1998). Role of Psychology in the Emerging Indian Society. Presidential Address Souvenir, 2nd National conference of PPCRA (Pracchi Psycho-cultural Research Association, Punjab University, Patiala 3 & 4 April.*
3. *Bhargava, Rakhi, Mood States and motivational patterns of Youth Drug abusers. Master's Thesis in Psychology Agra: Dr. Bhim Rao Ambedkar University*
4. *Choudhary A.K. (1996) A. Comparative Study of Personality correlates of drug addicts' vs non-drug addicts- A hierarchical bond model.*
5. *Falwicz, J.K. (1970), Social Determinants of alcohol consumption among the polish youth psychological Abstracts, 789*
6. *Shylaja H and Raj, Sava Sananda, H (1994), Medical health states and value orientation among alcohol and drug addict Psychological studies 39(1) 20-23.*
7. *Geeta Press Gorakhpur*
8. *Shiv Puran, Geeta Press Gorakhpur*
9. *Kalyan, Geeta Press Gorakhpur*
10. *Atharv Ved, Geeta Press Gorakhpur*
11. *Hindustan Times, Meerut 17 Sept. 2016, 28 June, 2017*
12. *Navbharat Times, Meerut 07 June 2017*
13. *Yog Darshan, Swami Vivekanand*
14. *Dainik Jagran, Meerut 07 June, 2016*
15. *Amar Ujala, Meerut 07, 08 June, 2016*